

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़

लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ ALLAH عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले । (المستطرف ج 1 ص 4، دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना  
व बकीअ  
व मफ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

## वीरान महल

येह रिसाला ( वीरान महल )

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मकतबतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

**राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)**

मकतबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की

मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# वीरान महल

शायद नफ़्स रुकावट डाले मगर आप ( 23 सफ़हात ) का येह  
रिसाला पूरा पढ़ कर अपनी आखिरत का भला कीजिये ।

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने  
आलीशान है : “जिस ने मुझ पर दिन भर में एक हज़ार दुरूदे पाक पढ़े  
वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले ।”

(الترغيب والترهيب ج ٢ ص ٣٢٨ حديث ٢٢)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

हज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी رَحِمَهُ اللهُ الْهَادِي बयान फ़रमाते  
हैं कि मेरा एक बार कूफ़ा जाना हुवा, वहां एक सरमाया दार के आलीशान  
महल पर नज़र पड़ी जिस से ऐशो तनअूउम ख़ूब झलक रहा था, दरवाजे  
पर गुलामों का झुरमट था और एक खुशगुलू कनीज़ येह नग़मा अलाप  
रही थी :

أَلَا يَا دَارُ لَا يَدْخُلُكَ حُرٌّ وَلَا يَعْثَبُ بِسَاكِنِكَ الرَّمَانُ

دینہ

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالَمِيَّة ने आशिकाने रसूल की मदनी तहरीक,  
दा'वते इस्लामी के तीन दिन के बैनल अक्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (21, 22, 23  
शा'बानुल मुअज्जम 1424 सि.हि. 17-18-19 अक्टूबर 2003 ई. इतवार मुलतान  
शरीफ़) में फ़रमाया । तरमीम व इजाफ़े के साथ तहरीरन हाज़िरे खिदमत है ।

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह ﷻ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

या'नी ऐ मकान ! तुझ में कभी ग़म दाख़िल न हो और तेरे अन्दर रहने वालों को ज़माना कभी भी पामाल न करे।

कुछ अर्से बा'द मेरा फिर उस महल से गुज़र हुवा तो उस के दरवाज़े पर सियाही छा रही थी, नोकर चाकर गाइब थे और उस वीरान महल पर बोसीदगी व शिकस्तगी के आसार नुमायां थे, ज़बाने हाल मुरुरे ज़माना के हाथों उस की ना पाएदारी ज़ाहिर कर रही थी, फ़ना के क़लम ने उस की दीवारों पर आराइश व ज़ैबाइश की जगह बरबादी व इब्रत को इबारत कर दिया था और अब वहां खुशी व मसरत के बजाए फ़ना की लै में रन्जो वहशत का नग़मा गूँज रहा था ! मैं ने उस महल की वहशत अंगेज़ वीरानी के बारे में दरयाफ़्त किया तो मा'लूम हुवा कि सरमाया दार मर गया, खुदाम रुख़्सत हो गए, भरा घर उजड़ गया, अज़ीमुश्शान महल वीरान हो गया, जहां हर वक़्त लोगों की आमदो रफ़्त से रौनक़ रहती थी अब वहां सन्नाटा छा गया। हज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْہِ ف़रमाते हैं : मैं ने उस वीरान महल का दरवाज़ा खट खटाया तो एक कनीज़ की नहीफ़ (या'नी कमज़ोर) आवाज़ आई, मैं ने उस से पूछा : इस महल की शानो शौकत और इस की चमक दमक कहां गई ? इस की रोशिनयां, इस के जगमग जगमग करते कुमकुमे क्या हुए ? और इस में बसने वालों पर क्या बीती ? मेरे इस्तिफ़सार पर वोह बूढ़ी कनीज़ अश्कबार हो गई और उस ने वीरान महल की दास्ताने ग़म निशान सुनाना शुरू की और कहा : इस के मकीन (या'नी रहने वाले) अरिज़ी तौर पर यहां रिहाइश पज़ीर थे, उन की तक्दीर ने उन को क़स्स (या'नी महल) से क़ब्र में मुन्तक़िल कर दिया। इस वीरान महल में रहने वाले हर फ़र्दे खुशहाल और इस के सारे अस्बाब व माल को ज़वाल लग गया, और येह कोई नई बात नहीं, दुन्या का तो येही दस्तूर है कि जो भी

فَرَمَانِهٖ مُسْتَفَا : عَلَّ اللهُ تَعَالَى عَيْنِي وَعَلَى وَجْهِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

इस में आता और खुशियों का गन्ज पाता है बिल आखिर वोह मौत का रन्ज पाता और वीरान क़ब्रिस्तान में पहुंच जाता है, जो इस दुनया से वफ़ा करता है येह उस के साथ बे वफ़ाई ज़रूर करती है। मैं ने उस कनीज़ से कहा : एक बार मैं यहां से गुज़रा था तो इस के अन्दर एक कनीज़ येह नगमा गा रही थी :

أَلَا يَا دَارُ لَا يَدْخُلُكَ حُرٌّ وَلَا يَعْثَبُ بِسَاكِنِكَ الرَّمَانُ

या'नी ऐ मकान ! तुझ में कभी ग़म न दाख़िल हो और तेरे अन्दर रहने वालों को ज़माना कभी भी पामाल न करे।

वोह कनीज़ बिलक बिलक कर रोने लगी और बोली : वोह बद नसीब गुलूकारा मैं ही हूं, इस वीरान महल के मकीनों में से मेरे सिवा अब कोई जिन्दा नहीं रहा। फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींच कर कहा : अफ़सोस है उस पर जो येह सब कुछ देख कर भी (फ़ानी) दुन्या के धोके में मुब्तला रहते हुए अपनी मौत से ग़ाफ़िल हो जाए।

(رَوْضُ الرِّيَاحِينَ مِاضِي ٢٠٤)

**हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये !**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! “वीरान महल” की हिकायत अपने मकीनों (या'नी इस में रहने वालों) के फ़ना के हाथों मौत के घाट उतरने का कैसा इब्रत नाक मन्ज़र पेश कर रही है ! आह ! वोह लोग फ़ानी दुन्या की आसाइशों के बाइस मसरूरो शादां, ज़वाल व फ़ना से बे ख़ौफ़, मौत के तसव्वुर से बे परवा, लज़्ज़ाते दुन्या में बद मस्त थे। इस दारे ना पाएदार में यकायक मौत से हम कनार होने के अन्देशे से ना बलद, पुख़्ता व उम्दा मकानात की ता'मीरात करने, इन को दीदा ज़ैब अश्या से मुज़य्यन (Decorate) करने में मसरूफ़ थे, क़ब्र के अंधेरों और उस की

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جَلَّ شَعَالٌ عَلَيْهِمْ وَالْيَوْمَ تَسْمُ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़े अल्लाह عزوجل उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

वहूशतों से बे नियाज़ जगमग जगमग करती किन्दीलों और कुमकुमों से अपने मकानों को रोशन करने में मशगूल थे, अहलो इयाल की आरिज़ी उन्सिय्यत, दोस्तों की वक्ती मुसाहबत और खुद्दाम की खुशामदाना खिदमत के भरम में क़ब्र की तन्हाई को भूले हुए थे। मगर आह! फ़ना का बादल यकायक गरजा, मौत की आंधी चली और दुन्या में ता देर रहने की उन की उम्मीदें खाक में मिल कर रह गई, उन के मसरतों और शादमानियों से हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये, रोशिनयों से जगमगाते कुसूर (या'नी महल्लात) से घुप अंधेरी कुबूर में उन्हें मुन्तक़िल कर दिया गया। आह! वोह लोग कल तक अहलो इयाल की रौनकों में शादां व मसरूर थे और आज कुबूर की वहूशतों और तन्हाइयों में मग़मूम व रन्ज़ूर हैं।

अजल ने न किस्रा ही छोड़ा न दारा इसी से सिकन्दर से फ़ातेह भी हारा  
हर इक ले के क्या क्या न हसरत सिधारा पड़ा रह गया सब यूंही ठाठ सारा

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

**काबिले मजम्मत कौन ?**

इस हिक्क़ायत के आख़िर में कनीज़ की नसीहत में भी इब्रत के बे शुमार **मदनी फूल** हैं, मगर अफ़सोस है उस पर जो दुन्या की नैरंगियां (या'नी फ़रेब कारियां) देखने के बा वुजूद भी इस के धोके में मुब्तला रहे और मौत से यक्सर गाफ़िल हो जाए। वाक़ेई जो दुन्यावी जिन्दगी के धोके में पड़ कर अपनी मौत और क़ब्रो हशर को भूल जाए और अल्लाह पाक को राज़ी करने के लिये अमल न करे, निहायत ही काबिले मजम्मत है। इस के धोके से बचने की हमें हमारा अल्लाह करीम खुद तम्बीह फ़रमा

फ़रमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (अबिन सन्ही)

रहा है। चुनान्वे पारह 22 सूरे फ़ातिर की आयत 5 में इर्शाद होता है :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّكُمْ الْحَيَاةُ  
الدُّنْيَا

तरजमए कन्जुल ईमान : ऐ लोगो !  
बेशक अल्लाह का वा'दा सच है तो  
हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की  
जिन्दगी ।

### बांस का झोंपड़ा (हिकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन जो मौत और इस के बा'द वाले मुआमलात से आगाह है वोह दुन्या की रंगीनियों और इस की आसाइशों के धोके में नहीं पड़ सकता। हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ नूहैब फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना नूहैब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक सादा से बांस के झोंपड़े में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई। अर्ज की गई : बेहतर था कि आप कोई उम्दा मकान ता'मीर फ़रमा लेते। फ़रमाया : जिस ने इस दुन्या से चले जाना है उस के लिये येह भी बहुत है।

(तारीख़ दमश्क लाबिन एसकर ज ६२ व २१०)

### फ़ानी मकान की सजावटें

अफ़सोस ! मुसलमानों की एक ता'दाद मौत की जानिब अ़दमे तवज्जोह के सबब आज दुन्या में उम्दा उम्दा मकानात की ता'मीरात में मुन्हमिक (या'नी बे इन्तिहा मसरूफ़) नज़र आ रही है। अपने मकानात को इंग्लिश टाइल्ड बाथ, अमरीकन किचन, मार्बल फ़्लोरिंग, वॉर्ड रोब, फुल ग्रिल वर्क, फुल वुड वर्क, एक्सट्रा वर्क से तो ख़ूब सजाया जा रहा है मगर नेकियों के ज़रीए अपनी क़ब्र की सजावट की तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं। एक अरबी शाइर ने किस क़दर दर्द भरे अन्दाज़ में हमें समझाने की कोशिश की है, मुलाहज़ा हो :

फरमाने मुस्फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

رَزَيْنَتْ بَيْنَكَ جَاهِلًا وَعَمْرُتَهُ  
وَلَعَلَّ غَيْرَكَ صَاحِبُ الْبَيْتِ  
مَنْ كَانَتْ الْآيَامُ سَائِرَةً بِهِ  
فَكَأَنَّهُ قَدْ حَلَّ بِالْمَوْتِ  
وَالْمَرَّةُ مُرْتَهَنٌ يُسَوِّفُ وَلَيْتَ  
وَهَلَاكُهُ فِي السَّوْفِ وَاللَّيْتِ  
فَلِلَّهِ دُرْفَتِي تَدَبَّرَ أَمْرَهُ

فَعَدَا وَرَاحَ مُبَاوِرَ الْمَوْتِ

**अश्रार का तरजमा** ﴿1﴾ (दुनिया की हकीकत और आखिरत की मा'रिफ़त (या'नी पहचान) से) जहालत की बिना पर तू अपने मकान को ज़ीनत देने और सिर्फ़ इसी को आबाद करने में लगा हुआ है । और (तेरे मरने के बा'द) शायद तेरा ग़ैर इस मकान का मालिक हो ﴿2﴾ जिस को अय्याम (की गाड़ी क़ब्र की तरफ़) खींचती चली जा रही है वोह गोया मौत से मिल चुका या'नी बहुत जल्द मर जाएगा ﴿3﴾ और आदमी (दुनियावी मक़ासिद के हुसूल में) उम्मीद व रजा के फन्दे में गिरिफ़्तार है हालां कि इन ही झूटी उम्मीदों में इस की हलाकत पोशीदा है ﴿4﴾ उस जवान का अज़्र **अल्लाह** पाक (के ज़िम्मए करम) पर है जिस ने अपने (क़ब्रो आखिरत के) मुआमले की तदबीर की और सुबहो शाम मौत की तय्यारी करने में जल्दी की ।

**बुलन्द मकान ज़मीन बोस कर दिया (हि़कायत)**

**सरकारे** दो जहान, हुजूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उम्दा मकानात से किस क़दर बे रग़बती थी इस बात को “अबू दावूद शरीफ़” की इस रिवायत से समझने की कोशिश कीजिये ! चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहीं तशरीफ़ ले गए हम भी साथ ही थे कि ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक **बुलन्द इमारत** मुलाहज़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

की तो फ़रमाया : येह क्या है ? अर्ज़ की गई : येह फुलां अन्सारी की है । (येह सुन कर) मदीने के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ख़ामोश हो गए और येह बात क़ल्बे अत्हर में रख ली । हत्ता कि उस इमारत का मालिक हाज़िर हुवा और उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को (लोगों की मौजूदगी में) सलाम अर्ज़ किया, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस से ए'राज़ किया, उस (अन्सारी) ने येह अमल कई मरतबा किया यहां तक कि उस (अन्सारी) शख़्स ने अपने बारे में नाराज़ी (का इज़हार) और ए'राज़ जान लिया तो उस ने जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के अस्हाब से येह कैफ़ियत बयान करते हुए कहा : **वल्लाह ! मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को नाराज़ पाता हूं । सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने फ़रमाया कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले गए थे तो तुम्हारी इमारत देखी । (या'नी हमारा अन्दाज़ा येही है कि तुम से नाराज़ी का सबब तुम्हारी ता'मीर कर्दा बुलन्द इमारत है । येह सुन कर) वोह (अन्सारी) अपनी इमारत की तरफ़ लौटे और उसे ढा कर ज़मीन बोस कर दिया । (ابوداؤد ج ٤ ص ٤٦٠ حديث ٥٢٣٧ ملخصاً)

## मेरी ज़िन्दगी का मक्सद है हज़ूर को मनाना

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** येह है हज़राते सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इश्के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ । मुफ़स्सिरे शहीर हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें न तो इमारत ढाने का हुक्म दिया और न ही येह फ़रमाया कि इस तरह की इमारत बनाना जाइज़ नहीं, उन सहाबी को सिर्फ़ अन्दाज़ा ही हुवा कि शायद ताजदारे



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ायामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस इमारत के सबब मुझ से नाराज़ हो गए हैं, तो उन का येह ज़ेहन बना कि येह इमारत मेरे और महबूब के दरमियान रुकावट बन गई लिहाज़ा उसे ढा दिया। इस ढाने में माल को बरबाद करना नहीं और न ही येह फुज़ूल खर्ची है बल्कि अस्ल मक्सूद महबूब को मनाना है, अगर इमारत ढाने से अल्लाह पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ राज़ी हो जाएं तो यकीनन यकीनन यकीनन सौदा निहायत ही सस्ता है, जनाबे ख़लील عَلَيْهِ السَّلَام तो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये फ़रज़न्द को ज़ब्द करने के लिये तय्यार हो गए थे। (मिरआत, जि. 7, स. 21 मुलख़ख़सन) हज़रते सय्यिदुना इस्माईल ज़बीहुल्लाह के ज़ब्द से मुतअल्लिक कुरआनी वाक़िआ मशहूरौ मा'रूफ़ है। येह उन्हीं हज़रात عَلَيْهِمَا السَّلَام के साथ ख़ास था अब कोई ख़्वाब वग़ैरा में हुक्म पा कर अपनी औलाद को ज़ब्द नहीं कर सकता, अगर करेगा तो कातिल और जहन्नम का हक़दार ठहरेगा।

नहीं चाहता हुक्मत नहीं सलतनत है पाना

मेरी ज़िन्दगी का मक्सद है हुज़ूर को मनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पुर असरार पथर (हिकायत)

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़करिय्या तैमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيمِ फ़रमाते हैं :

“ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अब्दुल मलिक मस्जिदे हराम शरीफ़ में मौजूद था कि उस के पास एक पथर लाया गया जिस पर कोई तहरीर कन्दा थी। उस ने ऐसे शख्स को बुलाने का कहा जो इस को पढ़ सके। चुनान्चे मशहूर ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तशरीफ़ लाए और उसे पढ़ा, उस पर लिखा था : “ऐ इब्ने आदम ! अगर तू अपनी मौत के करीब होने को जान ले तो लम्बी लम्बी उम्मीदों से कनारा

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس کے پاس मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

कशी इख़्तियार कर के अपने नेक अमल में ज़ियादती का सामान करे और हिंस व लालच और दुन्या कमाने की तदबीरें कम कर दे। (याद रख!) अगर तेरे क़दम फिसल गए तो रोज़े क़ियामत तुझे नदामत का सामना होगा, तेरे अहलो इयाल तुझ से बेज़ार हो जाएंगे और तुझे तकलीफ़ में मुब्तला छोड़ देंगे, तेरे मां बाप और अज़ीज़ व अहबाब भी तुझ से जुदा हो जाएंगे, तेरी औलाद और क़रीबी रिश्तेदार तेरा साथ न देंगे। फिर तू लौट कर दुन्या में आ सकेगा न नेकियों में इज़ाफ़ा कर सकेगा। पस उस हस्तो नदामत की साअत से पहले आख़िरत के लिये अमल कर ले।”

वोह है ऐशो इशरत का कोई महल भी जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी  
बस अब अपने इस जहल से तू निकल भी येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी  
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है  
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

### अक्ल मन्द के करने का काम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अक्ल मन्द को चाहिये कि वोह अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी का जाएज़ा ले, अपने गुनाहों पर नादिम हो कर उन से सच्ची तौबा करे, ज़ियादा देर ज़िन्दा रहने की उम्मीद के धोके में न पड़े बल्कि क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी के लिये फ़ौरन नेक आ'माल में लग जाए, दौलतो माल और अहलो इयाल की महबूबत में न नेकियां छोड़े न गुनाहों में पड़े कि इन सब का साथ तो दम भर का है और नेकियां क़ब्रो आख़िरत बल्कि दुन्या में भी काम आएंगी।

अज़ीज़, अहबाब, साथी, दम के हैं, सब छूट जाते हैं

जहां येह तार टूटा, सारे रिश्ते टूट जाते हैं

जब किसी दुन्यवी शै से ख़ुशी हासिल हो तो.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसी फ़िक्रे आख़िरत उसी वक़्त

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو يعلى)

हासिल हो सकती है जब कि हम मौत को हर वक़्त अपनी आंखों के सामने रखें और इस दारे फ़ानी (या'नी ख़त्म हो जाने वाली दुनिया) की फ़ानी अश्या की दिल में कुछ वक़अत (या'नी क़द्रो क़ीमत) ही न समझें, बल्कि जब भी इस दुनिया की किसी चीज़ को देख कर खुशी हासिल हो तो फ़ौरन येह बात याद करें कि येह चीज़ अन्क़रीब मुझे छोड़ देगी या खुद मुझे इसे छोड़ कर जाना पड़ जाएगा।

जब इस बज़्म से उठ गए दोस्त अक्सर और उठते चले जा रहे हैं बराबर  
येह हर वक़्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र यहां पर तेरा दिल बहलता है क्यूंकर  
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है  
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

### बा रौनक़ घर देख कर रो पड़े (हिकायत)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मुतीअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السَّمِيعِ ने एक दिन अपने बा रौनक़ घर को देखा तो खुश हो गए मगर फ़ौरन रोना शुरूअ कर दिया और फ़रमाया : “ऐ ख़ूब सूरत मकान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मौत न होती तो मैं तुझ से खुश होता और अगर आख़िर कार तंग क़ब्र में जाना न होता तो दुनिया और इस की रंगीनियों से मेरी आंखें ठन्डी होतीं।” येह फ़रमाने के बा'द इस क़दर रोए कि हिचकियां बंध गईं।

(اتحاف السّادة للزّيدي ج ١٤ ص ٣٢)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** काम्याब व अक्ल मन्द वोही है जो दूसरों को मरता देख कर अपनी मौत याद करे और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी कर ले। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : **وَعَطَّ بَعِيرُهُ** : या'नी सआदत मन्द वोह है जो दूसरों से नसीहत हासिल करे।

(ايضاً)

फरमाने मुस्तफा ﷺ : جس کے پاس मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है ! (مسند احمد)

## दूसरों की मौत का तसव्वुर

गफ़लत के साथ मौत को याद करने से येह सआदत हासिल नहीं होगी कि इस तरह तो इन्सान हमेशा जनाजे देखता ही रहता है और कभी कभी मय्यित को अपने हाथों से कब्र में भी उतारता है। मौत का तसव्वुर इस तरह कीजिये कि तन्हाई में दिल को हर तरह के दुन्यावी खयालात से पाक कर के अपने उन दोस्तों और रिश्तेदारों को याद कीजिये जो वफ़ात पा चुके हैं, तसव्वुर ही तसव्वुर में उन फ़ौत शुदगान में से बारी बारी हर एक का चेहरा सामने लाइये और उन के हस्बे हाल खयाल कीजिये कि वोह किस तरह दुन्या में अपने अपने मन्सब व काम में मशगूल, लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधे दुन्यावी ता'लीम के ज़रीए मुस्तक़िबल की बेहतरी के लिये कोशां थे और ऐसे कामों की तदबीर में लगे थे जो शायद सालहा साल तक मुकम्मल न हो सकें, दुन्यावी कारोबार के लिये वोह तरह तरह की तक्लीफें और मशक्कतें बरदाश्त किया करते थे, वोह सिर्फ़ इस दुन्या ही के लिये कोशिशों में मसरूफ़ थे, इसी की आसाइशें उन्हें महबूब और इसी का आराम उन्हें मरगूब था। वोह यूं ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे गोया उन्हें कभी मरना ही नहीं है, मौत से ग़फ़िल, खुशियों में बद मस्त और खेल तमाशों में हर दम मगन थे। उन के कफ़न बाज़ार में आ चुके थे लेकिन वोह इस से बे ख़बर दुन्या की रंगीनियों में गुम थे। आह ! इसी बे ख़बरी के अ़ालम में यकायक उन्हें मौत ने आ लिया और वोह अंधेरी क़ब्रों में उतार दिये गए। उन के मां बाप ग़म से निढाल हो गए, उन की बेवाएं बेहाल हो गईं, उन के बच्चे बिलक्ते रह गए, मुस्तक़िबल के हसीन ख़्वाबों का आईना चक्ना चूर हो गया, उम्मीदें मल्या मेट हो गईं, उन के काम अधूरे रह गए, दुन्या के लिये उन की सब मेहनतें राएगां गईं। वुरसा उन के अम्वाल तक्सीम कर के मजे से खा रहे हैं और उन को भूल चुके हैं।

فرمانے میں : عمل اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है ! (طبرانی)

## दूसरों की क़ब्र का तसव्वुर

इस तसव्वुर के बा'द अब उन की क़ब्र के हालात के बारे में गौर कीजिये कि उन के बदन कैसे गल सड़ गए होंगे, आह! उन के हसीन चेहरे कैसे मसख़ हो कर बिगड़ चुके होंगे, वोह खिलखिला कर हंसते थे तो मुंह से फूल झड़ते थे, मगर आह! अब उन के वोह चमकीले ख़ूब सूरत दांत झड़ चुके होंगे और मुंह में पीप पड़ गई होगी, उन की मोटी मोटी दिलकश आंखें उबल कर रुख़्सारों पर बह गई होंगी, संवार संवार कर रखे हुए उन के रेशम जैसे बाल झड़ कर क़ब्र में बिखर गए होंगे, उन की बारीक ऊंची ख़ूब सूरत नाक में कीड़े घुसे हुए होंगे, उन के गुलाब की पंखड़ियों की मानिन्द पतले पतले नाजूक होंटों को कीड़े खा रहे होंगे। वोह नन्हे नन्हे बच्चे जिन की तुतली बातों से ग़मज़दा दिल खिल उठते थे क़ब्र में उन की ज़बानों पर कीड़े चिमटे होंगे, नौ जवानों के क़ाबिले रश्क तुवाना, वरज़िशी जिस्म ख़ाक में मिल गए होंगे, उन के तमाम जोड़ अलग अलग हो चुके होंगे।

**अपनी सकरात, मौत, गुस्ल व कफ़न,**

**जनाज़ा व क़ब्र का दर्दनाक तसव्वुर**

येह “तसव्वुर” करने के बा'द येह सोचिये कि आह! येही हाल अन्क़रीब मेरा भी होने वाला है, मुझ पर भी नज़्अ (सकरात) की कैफ़ियत तारी होगी, हाए! नज़्अ की सख़्तियां !! मौत का एक झटका तलवार के हज़ार वार से सख़्त होगा !!! आंखें छत पर लगी होंगी, अज़ीज़ो अक़ारिब जम्अ होंगे, मां “मेरा लाल, मेरा लाल” कह रही होगी, बाप मुझे “बेटा बेटा” कह कर पुकार रहा होगा, बहनें “भय्या भय्या” की सदाएं लगा रही होंगी। चाहने वाले आहें और सिस्कियां भर रहे होंगे, फिर

फरमाने मुस्ताफ़ा ﷺ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरुद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

इसी चीखो पुकार के पुरहौल माहोल में **रूह क़ब्ज़** कर ली जाएगी। अज़ीज़ों में कोहराम मच जाएगा, कोई आगे बढ़ कर मेरी आंखें बन्द कर देगा, मुझ पर कपड़ा उढ़ा दिया जाएगा। फिर **ग़स्साल** को बुलाया जाएगा, मुझे तख़्ते पर लिटा कर गुस्ल दिया जाएगा और **कफ़न** पहनाया जाएगा, आहो फुग़ां के शोर में घर से मेरा **जनाज़ा** रवाना होगा, मैं ने जिस घर के अन्दर सारी उम्र बसर की, कल तक जिन्हों ने नाज़ उठाए, आज वोही मेरा जनाज़ा उठा कर क़ब्रिस्तान की तरफ़ चल पड़ेंगे, फिर मुझे क़ब्र में उतार कर अपने हाथों से मुझ पर मिट्टी डालेंगे, आह ! फिर क़ब्र की तारीकियों में मुझे तन्हा छोड़ कर सब के सब पलट जाएंगे, मेरा दिल बहलाने के लिये कोई भी वहां न ठहरेगा। हाए ! हाए ! फिर क़ब्र में मेरा जिस्म गलना सड़ना शुरूअ हो जाएगा, इसे कीड़े खाना शुरूअ कर देंगे, वोह कीड़े पता नहीं मेरी सीधी आंख पहले खाएंगे या कि उलटी आंख, मेरी ज़बान पहले खाएंगे या मेरे होंट, हाए ! हाए ! मेरे बदन पर किस क़दर आज़ादी के साथ कीड़े रींग रहे होंगे, नाक, कान और आंखों वगैरा में घुस रहे होंगे। यूं अपनी मौत और क़ब्र के हालत का बारी बारी तसव्वुर बांधिये, क़ब्र के दबाने **मुन्कर नकीर** की आमद, उन के सुवालात और क़ब्र के अज़ाबात के ख़यालात दिल में लाइये और अपने आप को इन पेश आने वाले मुआमलात से डराइये। इस तरह **मौत का तसव्वुर** करने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** दिल में मौत का एहसास पैदा होगा, नेकियां करने और गुनाहों से बचने का ज़ेहन बनेगा, मौत को याद करने के लिये महीने में कम अज़ कम एक बार अंधेरा कर के या तन्हाई में इसी **वीरान महल** नामी बयान का केसिट सुनना नीज़ येह अश्आर पढ़ना सुनना **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** बेहद मुफ़ीद रहेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

## मौत की याद दिलाने वाले अश्रार

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार याद रख मैं हूँ अंधेरी कोठड़ी मेरे अन्दर तू अकेला आएगा नर्म बिस्तर घर पे ही रह जाएंगे घुप अंधेरी क़ब्र में जब जाएगा काम मालो ज़र नहीं कुछ आएगा जब तेरे साथी तुझे छोड़ जाएंगे क़ब्र में तेरा कफ़न फट जाएगा तेरा इक इक बाल तक झड़ जाएगा आह! उबल कर आंख भी बह जाएगी सांप बिच्छू क़ब्र में गर आ गए!

मुझे में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार तुझ को होगी मुझ में सुन वहशत बड़ी हां मगर आ'माल लेता आएगा तुझ को फ़र्शें खाक पर दफ़नाएंगे बे अमल! बे इन्तिहा घबराएगा गाफ़िल इन्सां याद रख पछताएगा क़ब्र में कीड़े तुझे खा जाएंगे याद रख नाजुक बदन फट जाएगा ख़ूब सूरत जिस्म सब सड़ जाएगा खाल उधड़ कर क़ब्र में रह जाएगी क्या करेगा बे अमल गर छा गए!

(वसाइले बख़्शिश (मुम्मम), स. 711, 712)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

रोते रोते हिचकियां बंधी हुई थीं (हिकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن

मौत व क़ब्रो आख़िरत को पेशे नज़र रखा करते थे, येही वजह है कि वोह गुनाहों से मुज्त्निब (या'नी दूर) और नेकियों पर मुस्तइद (या'नी तय्यार) रहते और इस दारे फ़ना की अरिज़ी लज़ज़तों में मुन्हमिक हो कर मुत्मइन हो जाने के बजाए ख़ौफ़े खुदा से गिर्या कनां रहते। चुनाच्चे हज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक्काशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الشّٰفِی फ़रमाते हैं कि हम हज़रते आमिर बिन अब्दुल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی के पास हाज़िर हुए। रोते रोते उन की हिचकियां बंधी हुई थीं, हम ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो फ़रमाने लगे : मुझे उस (तवील तरीन) रात का ख़ौफ़ रुला रहा है जिस की सुब्द यौमे क़ियामत है, या'नी क़ब्र की रात जू ही ख़त्म होगी क़ियामत का दिन शुरू हो जाएगा लिहाज़ा इस के होशरुबा तसव्वुर ने तड़पा रखा है। (الجلسة ج ۱ ص ۱۹۹)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (ابن عدی)

## मौत की याद क्यूं जरूरी है !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ब्रों हशर के अहवाल को सामने रख कर हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِين हमें भी मौत की याद और इस की आमद से क़बल इस की तय्यारी की तरगीब दिलाते हैं । चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : वोह शख्स कि जिस को मौत से शिकस्त खानी हो मिट्टी जिस का बिछोना, कीड़े जिस के अनीस (या'नी साथी), मुन्कर नकीर जिस के मुम्तहिन (या'नी इम्तिहान लेने वाले), क़ब्र जिस का ठिकाना, ज़मीन का पेट जिस की क़ियाम गाह, क़ियामत जिस की वा'दा गाह और जन्नत या जहन्नम जिस का मौरिद (या'नी पहुंचने की जगह) हो उसे सिर्फ़ मौत ही की फ़िक्र होनी चाहिये वोह सिर्फ़ इसी का ज़िक्र करे, इसी के लिये तय्यारी करे, इसी की तदबीर करे, इसी का मुन्तज़िर रहे और हक़ येह है कि अपने आप को फ़ौत शुदा लोगों में शुमार करे और खुद को मरा हुवा तसव्वुर करे, क्यूं कि, जो चीज़ आ कर रहेगी वोह करीब ही है ।

(احياءُ القلوب ج ٥ ص ١٩١)

नबियों के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “अक्ल मन्द वोह है जो अपने नफ़्स का मुहासबा करे और मौत के बा'द के मुआमलात के लिये तय्यारी करे ।”

(ترمذی ج ٤ ص ٢٠٧ حدیث ٢٤٦٧)

## मिज़ाज पुर्सी पर ग़शी

बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِين मौत और इस दुनिया से कूच कर जाने को बहुत कसरत से याद करते बल्कि बसा अवक़ात उन पर मौत और क़ब्रों हशर की इस फ़िक्र व ख़ौफ़ का ऐसा ग़लबा होता कि उन पर बेहोशी तारी हो जाती । चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الشّافِي (से जब कोई अर्ज़ करता : क्या हाल है ? तो) फ़रमाया करते : मौत जिस



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَسَلُ اللّٰهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (ابن عساکر)

का मौड़ (या'नी वा'दे का वक़्त), ज़मीन के नीचे जिस का ठिकाना, कब्र जिस का घर, कीड़े जिस के अनीस (या'नी साथी) हों और इसी के साथ साथ उसे अल फ़ज़ज़ल अक्बर (बड़ी घबराहट या'नी क़ियामत) का भी इन्तिज़ार हो, उस का हाल क्या होगा ? येह फ़रमा कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ पर रिक्कत तारी हो जाती हत्ता कि रोते रोते बेहोश हो जाते। (المستطرف ج ٢ ص ٤٧٧)

### सुब्ह किस हाल में की ? (हि़कायत)

इसी तरह हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَفَّار से किसी ने पूछा : आप ने सुब्ह कैसे की ? फ़रमाया : उस शख़्स की सुब्ह किस हाल में होगी जो एक घर (या'नी दुन्या) से दूसरे घर (या'नी आख़िरत) की तरफ़ जाने वाला हो और कुछ पता न हो कि जन्नत में जाना है या दोज़ख़ ठिकाना है। (تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْنَ ص ٣٠٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की मुबारक मदनी फ़ि़क़ से इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हुए मौत और आख़िरत की तय्यारी का ज़ेहन बनाएं और इस बे सबात (या'नी कमज़ोर), अरिज़ी और फ़ानी दुन्या पर ए'तिमाद व इत्मीनान के बजाए आख़िरत की तय्यारी में मशगूल रहें।

### आबाद मकान वीरान हो जाएंगे

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने अपने एक ख़ुल्बे में इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! दुन्या तुम्हारा बाकी रहने वाला ठिकाना नहीं है, येह तो वोह दारे ना पाएदार है जिस के लिये अल्लाह पाक ने फ़ना होना और इस के रहने वालों पर यहां से रुख़सत हो जाना लिख दिया है। अन्करीब मज़बूत और आबाद मकान टूट फूट कर वीरान हो जाएंगे, और इन मकानात के कितने ही ऐसे मकीन (या'नी रहने वाले) हैं जिन पर रशक किया जाता है ब उज़्लत तमाम (या'नी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے کتاب میں مصلحہ پر دुरूدہ پاک لکھا تو جب تک میرا نام اس میں رہے گا فیریشے اس کے لیے इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

जल्द तर) रुख़्सत हो जाएंगे। पस ऐ लोगो ! अल्लाह पाक तुम पर रहूम फ़रमाए इस (दुन्या) में से उम्दा चीज़ (या'नी नेकियां) ले कर अच्छे हाल में निकलो और तोशाए सफ़र ले लो। पस बेहतरीन तोशा तक्वा व परहेज़ गारी है।

(احیاء العلوم ج ۵ ص ۲۰۱)

## दुन्या बरबाद हो कर रहेगी !

करोड़ों शाफ़िइय्यों के अज़ीम पेशवा हज़रते सय्यिदुना इमामे शाफ़ेई ﷺ ने एक शख़्स को नसीहत करते हुए इर्शाद फ़रमाया : “बेशक दुन्या फिसलने की जगह और ज़िल्लत का घर है, इस की आबादी बरबाद होने वाली और इस के साकिनीन या'नी बाशिन्दे क़ब्रों में पहुंचने वाले हैं, इस से जो कुछ जम्अ किया है वोह हर सूरत इस से जुदा होना है और इस की दौलत मन्दी, तंगदस्ती में बदलने वाली है, इस में ज़ियादती हकीकत में तंगी है और इस में तंगी दर अस्ल आसानी है। पस, अल्लाह पाक की बारगाह में घबरा कर तौबा कर और उस के अता कर्दा रिज़क़ पर राज़ी रह, दारे बका (या'नी आख़िरत) के अज़्र को दारे फ़ना (या'नी दुन्या) के बदले में जाएअ न कर, तेरी ज़िन्दगी ढलता साया और गिरती दीवार है, अपने अमल में ज़ियादती और अमल (या'नी दुन्यावी उम्मीद) में कमी कर।”

(مناقِبُ الشّافعی للبيهقی ج ۲ ص ۱۷۸)

## आज अमल का मौक़अ है !

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा ﷺ ने एक मरतबा कूफ़े में खुत्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया : “बेशक तुम्हारे बारे में मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि कहीं तुम लम्बी लम्बी उम्मीदें न बांध बैठो और ख़्वाहिशात की पैरवी में न लग जाओ, याद रखो ! लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुला देती हैं, और ख़बरदार ! नफ़सानी ख़्वाहिशात

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े कियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

की पैरवी राहे हक़ से भटका देती है, ख़बरदार ! दुन्या अन्क़रीब पीठ फ़ैरने वाली और आख़िरत जल्द आने वाली है, आज अमल का दिन है हि़साब का नहीं और कल हि़साब का दिन होगा, अमल का नहीं।”

(إيضاً ص ०८)

## दुन्या आख़िरत की तय्यारी के लिये मख़्सूस है

हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सब से आख़िरी खुत्बा जो इर्शाद फ़रमाया उस में येह भी है : “अल्लाह पाक ने तुम्हें दुन्या महूज़ इस लिये अता फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए आख़िरत की तय्यारी करो, इस लिये अता नहीं फ़रमाई कि तुम इसी के हो कर रह जाओ, बेशक दुन्या महूज़ फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है। तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं बहका कर बाक़ी (आख़िरत) से गाफ़िल न कर दे, फ़ना हो जाने वाली दुन्या को बाक़ी रहने वाली आख़िरत पर तरजीह न दो क्यूं कि दुन्या का रिश्ता क़़अ होने वाला है और बेशक अल्लाह पाक की तरफ़ लौटना है। अल्लाह पाक से डरो क्यूं कि उस का डर उस के अज़ाब के लिये (रोक और) ढाल और अल्लाह पाक तक पहुंचने का ज़रीआ है।”

है येह दुन्या बे वफ़ा आख़िर फ़ना चल दिये दुन्या से सब शाहो गदा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान के आख़िर में सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतों और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जिस ने मेरी सुन्नत से महबूबत की उस ने मुझ से महबूबत की और जिस ने मुझ से महबूबत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।”

(ابن عساکر ج १ ص ३४३)

دینہ

لِإِنْقَابِ الشَّافِعِيِّ لِلْبَيْهَقِيِّ ج २ ص ۱۷۸-

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : बरोजे क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَي الْحَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

“सफ़ेद कफ़न में कफ़नाओ” के सोलह हुरूफ़ की  
निस्बत से कफ़न के 16 मदनी फूल

❖ 6 फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ : ﴿1﴾ “जो मय्यित को कफ़न दे तो उस के लिये मय्यित के हर बाल के बदले में एक नेकी है।”<sup>1</sup> हज़रते अल्लामा अब्दुररुफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي हदीसे पाक के इस हिस्से “जो मय्यित को कफ़न दे” के तहूत फ़रमाते हैं : या’नी “जिस ने अपने माल से मय्यित के कफ़न का इन्तिज़ाम किया”<sup>2</sup> ﴿2﴾ जो मय्यित को कफ़न दे अल्लाह पाक उसे जन्नत के बारीक और मोटे रेशम का लिबास पहनाएगा<sup>3</sup> ﴿3﴾ “जो किसी मय्यित को नहलाए, कफ़न दे, खुशबू लगाए, जनाज़ा उठाए, नमाज़ पढ़े और जो नाक़िस बात नज़र आए उसे छुपाए वोह अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसा जिस दिन मां के पेट से पैदा हुवा था।”<sup>4</sup> इस हिस्से हदीस “नाक़िस बात” से मुराद येह है कि : “जो बात ज़ाहिर करने के क़ाबिल न हो जैसे चेहरे का रंग सियाह हो जाना” ﴿4﴾ अपने मुर्दों को अच्छा कफ़न दो क्यूं कि वोह अपनी क़ब्रों में आपस में मुलाक़ात करते और (अच्छे कफ़न से) तफ़ाखुर करते (या’नी खुश होते) हैं<sup>5</sup> ﴿5﴾ जब तुम में से कोई अपने भाई को कफ़न दे, तो उसे अच्छा कफ़न दे<sup>6</sup> ﴿6﴾ अपने मुर्दों को सफ़ेद कफ़न में कफ़नाओ।<sup>7</sup>

कफ़न पहनाने की निय्यत

❖ कफ़न पहनाने की निय्यत : रिज़ाए इलाही पाने और सवाबे आख़िरत

لـ تاريخ بغداد ج ٤ ص ٢٦٣ لـ التيسير ج ٢ ص ٤٤٢ - لـ المستدرک ج ١ ص ٦٩٠ حديث ١٣٨٠ - لـ ابن ماجه ج ٤

ص ٢٠١ حديث ١٤٦٢ - لـ الفردوس ج ١ ص ٩٨ حديث ٣١٧ - لـ مسلم ص ٤٧٠ حديث ٩٤٣ - لـ ترمذی ج ٢ ص ٢٠١ حديث ٩٦٦ -

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ السَّلَامُ : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमते भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

कमाने के लिये अपनी मौत के बा'द खुद को पहनाए जाने वाले कफ़न को याद करते हुए अदाए फ़र्ज़ के लिये मय्यित को सुन्नत के मुताबिक़ कफ़न पहनाऊंगा ❀ मय्यित को कफ़न देना “फ़र्जे किफ़ाया” है<sup>1</sup> या'नी किसी एक के देने से सब बरिय्युज्जिम्मा हो गए (या'नी सब के सर से फ़र्ज़ उतर गया) वरना जिन जिन को ख़बर पहुंची थी और कफ़न न दिया वोह सब गुनाहगार होंगे।

### मर्द का मस्नून कफ़न

❀ (1) लिफ़ाफ़ा या'नी चादर (2) इज़ार या'नी तहबन्द (3) क़मीस या'नी कफ़नी। औरत के लिये इन तीन के साथ साथ मजीद दो येह हैं : (4) ओढ़नी (5) सीनाबन्द। (हाग़िरी ६: १२०) ❀ जो ना बालिग़ हूद्दे शह्वत<sup>2</sup> को पहुंच गया वोह बालिग़ के हुक्म में है या'नी बालिग़ को कफ़न में जितने कपड़े दिये जाते हैं इसे भी दिये जाएं और इस से छोटे लड़के को एक कपड़ा और छोटी लड़की को दो कपड़े दे सकते हैं और लड़के को भी दो कपड़े दिये जाएं तो अच्छा है और बेहतर येह है कि दोनों को पूरा कफ़न दें अगर्चे एक दिन का बच्चा हो। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 819) ❀ सिर्फ़ उलमा व मशाइख़ को बा इमामा दफ़न किया जा सकता है, आम लोगों की मय्यित को मअ़ इमामा दफ़नाना मन्अ़ है। (मदनी वसिय्यत नामा, स. 4) ❀ मर्द के बदन पर ऐसी खुशबू लगाना जाइज़ नहीं जिस में जा'फ़रान की आमेज़िश हो औरत के लिये जाइज़ है। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 821) ❀ जिस ने एहराम बांधा (और इसी हालत में वफ़ात पाई) है उस के बदन पर भी खुशबू लगाएं और उस का मुंह और सर कफ़न से छुपाया जाए। (ऐज़न)

<sup>1</sup> : बहारे शरीअत, जि. 1, स. 817. <sup>2</sup> : हूद्दे शह्वत लड़कों में येह कि उस का दिल औरतों की तरफ़ रग़बत करे और लड़की में येह कि उसे देख कर मर्द को उस की तरफ़ मैलान (या'नी ख़्वाहिश) पैदा हो और इस का अन्दाज़ा लड़कों में बारह साल और लड़कियों में नव बरस है। (हाशियए बहारे शरीअत, जि. 1, स. 819)

फरमाने मुस्ताफा ﷺ : **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** : शबे जुमुआ और रोजे जुमुआ मुझ पर दुरुद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा कियामत के दिन मैं उस का शफीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الإيمان)

## कफ़न की तफ़्सील

❖ ﴿1﴾ **लिफ़ाफ़ा** : (या'नी चादर) या'नी मय्यित के क़द से इतनी बड़ी हो कि दोनों तरफ़ बांध सकें ﴿2﴾ **इज़ार** : (या'नी तहबन्द) चोटी (या'नी सर के शुरूअ) से क़दम तक या'नी लिफ़ाफ़े से इतना छोटा जो बन्दिश के लिये जाइद था ﴿3﴾ **क़मीस** : (या'नी कफ़नी) गरदन से घुटनों के नीचे तक और यह आगे और पीछे दोनों तरफ़ बराबर हो इस में चाक और आस्तीनें न हों । मर्द व औरत की कफ़नी में फ़र्क़ है, मर्द की कफ़नी कन्धों पर चीरें और औरत के लिये सीने की तरफ़ ﴿4﴾ **ओढ़नी** : तीन हाथ या'नी डेढ़ गज़ की होनी चाहिये ﴿5﴾ **सीनाबन्द** : पिस्तान से नाफ़ तक और बेहतर यह है कि रान तक हो । (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअत, जि. 1, स. 818) उमूमन तय्यार कफ़न ख़रीद लिया जाता है इस का मय्यित के क़द के मुताबिक़ मस्नून साइज़ का होना ज़रूरी नहीं, यह भी हो सकता है कि इतना ज़ियादा हो कि इसराफ़ में दाख़िल हो जाए, लिहाज़ा एह़तियात् इसी में है कि थान में से ह़स्बे ज़रूरत कपड़ा काटा जाए ❖ कफ़न अच्छा होना चाहिये या'नी मर्द ईदैन व जुमुआ के लिये जैसे कपड़े पहनता था और औरत जैसे कपड़े पहन कर मयके जाती थी उस क़ीमत का होना चाहिये । (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 818)

## कफ़न पहनाने का तरीक़ा

❖ गुस्ल देने के बा'द आहिस्ता से बदन किसी पाक कपड़े से पोंछ लीजिये ताकि कफ़न तर न हो, कफ़न को एक या तीन या पांच या सात बार धूनी दीजिये, इस से ज़ियादा नहीं, फिर इस तरहू बिछाइये कि पहले लिफ़ाफ़ा या'नी बड़ी चादर इस पर तहबन्द और इस के ऊपर कफ़नी रखिये, अब मय्यित को इस पर लिटाइये और कफ़नी पहनाइये, अब सर, दाढ़ी (और दाढ़ी न हो तो ठोड़ी) और बक़िय्या तमाम जिस्म पर खुशबू मलिये, वोह आ'ज़ा जिन पर सज्दा किया जाता है या'नी पेशानी, नाक,

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उहदु पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

हाथों, घुटनों और क़दमों पर काफ़ूर लगाइये। फिर इज़ार या'नी तहबन्द लपेटिये, पहले बाई या'नी उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से। फिर लिफ़ाफ़ा भी इसी तरह पहले बाई या'नी उलटी जानिब से फिर सीधी जानिब से लपेटिये ताकि सीधा ऊपर रहे। सर और पाउं की तरफ़ बांध दीजिये कि उड़ने का अन्देशा न रहे। औरत को "कफ़नी" पहना कर उस के बाल दो हिस्से कर के कफ़नी के ऊपर सीने पर डाल दीजिये और ओढ़नी आधी पीठ के नीचे से बिछ कर सर पर ला कर मुंह पर निकाब की तरह डाल दीजिये कि सीने पर रहे कि उस का तूल (या'नी लम्बाई) आधी पीठ से सीने तक है और अर्ज़ (या'नी चौड़ाई) एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक है फिर ब दस्तूर इज़ार व लिफ़ाफ़ा लपेटिये फिर सब के ऊपर सीनाबन्द पिस्तान के ऊपर से रान तक ला कर बांधिये। (मज़ीद तफ़सीलात के लिये बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 817 ता 822 का मुतालआ फ़रमाइये)

सुन्नतें सीखने के लिये मकतबतुल मदीना की दो किताबें (1) 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअत" हिस्सा 16 और (2) 120 सफ़हात की किताब "सुन्नतें और आदाब" हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रहमतें क़ाफ़िले में चलो  
होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो  
ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

येह रिसाला पढ़ लेने  
के बाद सवाब की निख्यत  
से किसी को दे दीजिये

ग़मे मदीना, बक़ीअ,  
मरिफ़रत और बे हिसाब  
जन्नतुल फिरदौस में  
आका के पड़ोस का तालिब



30 रबीज़ल आख़िर 1439 सि.हि.  
18-01-2018

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَسَلُ اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْكَ وَالْيَوْمُ تَسَمُّ جَعُ اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْكَ وَالْيَوْمُ تَسَمُّ جَعُ اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْكَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़ह	उन्वान	सफ़ह
हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये !	3	अपनी सकरात, मौत, गुस्ल व कफ़न,	
काबिले मज़म्मत कौन ?	4	जनाज़ा व क़ब्र का दर्दनाक तसव्वुर	12
बांस का झोंपड़ा (हिकायत)	5	मौत की याद दिलाने वाले अश्आर	14
फ़ानी मकान की सजावटें	5	रोते रोते हिचकियां बंधी हुई थीं (हिकायत)	14
बुलन्द मकान ज़मीन बोस		मौत की याद क्यूं ज़रूरी है !	15
कर दिया (हिकायत)	6	मिज़ाज पुर्सी पर ग़शी	15
मेरी जिन्दगी का मक़सद है हुज़ूर को मनाना	7	सुब्ह किस हाल में की ? (हिकायत)	16
पुर असरार पथ़र (हिकायत)	8	आबाद मकान वीरान हो जाएंगे	16
अक्ल मन्द के करने का काम	9	दुन्या बरबाद हो कर रहेगी !	17
जब किसी दुन्यवी शै से		आज अमल का मौक़अ है !	17
खुशी हासिल हो तो.....	9	दुन्या आख़िरत की तय्यारी के लिये	
बा रौनक़ घर देख कर रो पड़े (हिकायत)	10	मख़सूस है	18
दूसरों की मौत का तसव्वुर	11	कफ़न के 16 म-दनी फूल	19
दूसरों की क़ब्र का तसव्वुर	12	मआख़िज़ो मराजेअ	23

माخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دار التراث قاہرہ	مناقب الشافعی	دار ابن حزم بیروت	قران پاک
دار الفکر بیروت	روض الربیعین	دار احیاء التراث العربی بیروت	مسلم
دار الکتب العربی بیروت	حنبیة الغافلین	دار الفکر بیروت	ابوداؤد
دار الکتب العلمیة بیروت	المجالسة	دار المعرفہ بیروت	ترمذی
دار الکتب العلمیة بیروت	ذم الطھوی	دار المعرفہ بیروت	ابن ماجہ
دار صادر بیروت	احیاء العلوم	دار المعرفہ بیروت	المستدرک
دار الکتب العلمیة بیروت	اتحاف السادة	دار الکتب العلمیة بیروت	القرودس
دار الکتب العلمیة بیروت	مستطرف	دار الکتب العلمیة بیروت	الترغیب والترہیب
دار الفکر بیروت	عالمگیری	دار الکتب العلمیة بیروت	التیسیر
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الادبیات لاہور	مرآة
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	مدنی وصییت نامہ	دار الکتب العلمیة بیروت	تاریخ بغداد
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	وسائل بخشش	دار الفکر بیروت	تاریخ دمشق